thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

# आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 5 रोहतक, 28 जून, 2014 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

## महर्षि के मानव मात्र पर चार विशेष उपकार

❑ खुशहालचन्द्र आर्य, 180 महात्मागांधी रोड, ( दो तल्ला ) कोलकाता-7

वैसे तो महर्षि दयानन्द के मानव मात्र पर सैकड़ों नहीं सहस्त्रों उपकार हैं, जिनकी गिनती करनी असम्भव है। इस लेख में केवल चार उपकारों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं, जिनको हम लोगों ने अन्दाज पाँच हजार वर्षों से प्राय: भुला दिया गया था। जो इसी भाँति हैं—

**( 1 ) सब का एक धर्म, वैदिक धर्म ही है**—सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक एक ही धर्म **'वैदिक धर्म'** को ही विश्व के सभी लोग मानते रहे। अन्दाज पांच हजार वर्ष पहले महाभारत का भीषण युद्ध हुआ। विश्वभर के सभी राजा, महाराजा, योद्धा, विद्वान् व आचार्य युद्ध में काम आ गये। इस स्थिति में अविद्वान्, स्वार्थी लोग ही विद्वान् समझे जाने लगे और उन स्वार्थी लोगों ने अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत-मतान्तर प्रचलित कर दिये जिससे लोग धर्म भ्रमित हो गये और विश्व में अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का ही राज स्थापित हो गया और वैदिक धर्म प्राय: लुप्त हो गया और लोगों ने अन्धविश्वास, पाखण्ड रूपी अधर्म को ही धर्म मान लिया। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द अपने जीवन में कठोर तपस्या करके अनेक दु:खों का कष्टों को सहकर अपने सद्गुरु स्वामी विरजानन्द जी की गोद में अन्दाज तीन साल बैठकर महाभाष्य व अष्टाध्यायी का गहन अध्ययन करके वेदों के सही अर्थ निकालकर विश्व में वेदों का पुन: प्रकाश किया और करीब पांच हजार वर्षों से जो लोग वैदिक धर्म को भूल गये थे और अनेक मत-मतान्तरों में फंस गये थे, उनको पुन: वैदिक धर्म में लाकर उनके जीवन को सफल बनाने के लिए एवं उनके जीवन में सुख व शान्ति लाने के लिए जो वैदिक धर्म पर चलने से ही सम्भव है, उनको वैदिक धर्म पर चलने की प्रेरणा दी और मोक्ष प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द के आने से पहले, लोग अनेक मत-मतान्तरों में बंटे हुए थे, उनके ग्रन्थ भी अलग-अलग थे जो सभी मनुष्यकृत थे। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी होने से उनके बनाये ग्रन्थों में भी अलगाववाद का होना आवश्यक है। परन्तु महर्षि ने वेदों को ईश्वरीय ज्ञान तथा सब सत्यविद्याओं की पुस्तक बतलाकर विश्व को यह बतलाया कि मानव मात्र का एक ही धर्म 'वैदिक धर्म' है और एक ही धर्म-ग्रन्थ 'वेद' है। इन्हीं को मानने से विश्व का कल्याण है अन्यथा परस्पर के भेदभाव रहना निश्चित है।

**( 2 ) सबका एक ही उपास्य देव 'ओ३म्' है**—महाभारत युद्ध से पहले एक ही धर्म 'वैदिक धर्म' था और एक ही उपास्य देव 'ओ३म्' था। महाभारत के बाद अज्ञानी, स्वार्थी लोगों ने जहां अनेक मत-मतान्तर चला दिये, वहीं अनेक उपास्य देव भी चला दिये। अनेक मतों में शैव, वैष्णव व शाक्त मुख्य थे। शैवों ने शिव (महादेव) को, वैष्णवों ने विष्णु को और शाक्तों ने दुर्गा, काली, भैरव आदि को अपना उपास्य देव मानना प्रारम्भ कर दिया। ब्रह्मा को सृष्टिकर्त्ता, विष्णु को पालनकर्त्ता और शिव को संहारकर्त्ता बतलाकर तीनों को उपास्य देव मान लिया। श्रीराम और श्रीकृष्ण को विष्णु का अवतार बतलाकर ईश्वर के रूप में ही उपास्य देव मानना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार अनेक देवी-देवताओं की उपासना होनी आरम्भ हो गई। महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में यह लिखकर भ्रम समाप्त कर दिया कि इन सभी देवताओं के नाम 'ओ३म्' के ही गुणों व कर्मों के नाम हैं, इसलिए एक 'ओ३म्' की उपासना करने से ही सभी देवताओं की उपासना हो जाती है। 'ओ३म्' ही सृष्टि को उत्पन्न करने वाला है, वही पालन करने वाला है और वही संहार करने वाला भी है, इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों देव 'ओ३म्' में ही समाहित हो जाते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में 'ओ३म्' के एक सौ नामों का वर्णन है। इसलिए महर्षि ने बताया कि किसी अन्य देवता की उपासना न करके केवल 'ओ३म्' की ही उपासना उसके गुणों का वर्णन करते हुए, उसके गुणों को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प करते हुये सन्ध्या द्वारा करनी चाहिए। यह बतलाकर महर्षि ने सभी मनुष्यों को जोड़ने का काम करके मनुष्य मात्र पर बड़ा उपकार किया है।

**( 3 ) एक ही नाम 'आर्य' था**—सृष्टि के आरम्भ में जितने भी मनुष्य थे, वेद ने उनको 'आर्य' नाम से सम्बोधित किया है और वेदों में लिखा है—**'अहं भूमिम् अददाम आर्य्याय'** इसका अर्थ है कि मैं ईश्वर धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वालों के लिए पृथ्वी के राज्य को देता हूँ यानि धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वाले आर्य ही इस पृथ्वी का आनन्द ले सकते हैं और वेदानुकूल चलते हुए अपने अन्तिम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। सृष्टि के आरम्भ में केवल दो किस्म के ही मनुष्य थे। गुण, कर्म, स्वभाव से अच्छे व्यक्तियों को 'आर्य' कहा जाता था और इसके विपरीत खराब चाल, चलन व व्यवहार वालों को 'अनार्य' कहा जाता था। अनाड़ी शब्द अनार्य का ही विकृत रूप है। महाभारत तक यही प्रथा चलती रही। रामायण, महाभारत की फिल्मों में हमने देखा है कि सीता ने श्रीराम को सदैव 'आर्यपुत्र' और द्रोपदी ने अर्जुन को सदैव 'आर्यपुत्र' के नाम से संबोधित किया है।

महाभारत तक हमारा नाम 'आर्य' और हमारे देश का नाम 'आर्यावर्त' था। इसके बाद मुसलमानों ने सिन्धु नदी का अभ्रंश करके हमें 'हिन्दू' और हमारे देश को 'हिन्दुस्तान' कहना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजों के आने पर हमें 'इंडियन' और हमारे देश को 'इंडिया' कहना आरम्भ कर दिया। महर्षि दयानन्द का हमारे ऊपर बड़ा ऋण है कि उन्होंने हमारा प्राचीन नाम 'आर्य' हमें याद दिला दिया। वेदप्रचार करने तथा परोपकारी कार्यों को करने के लिए महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना सन् 1875 में मुम्बई में की, इससे भी विश्वभर में वेदप्रचार तथा मानव कल्याण के कार्य काफी मात्रा में हो रहे हैं। यह भी महर्षि का हमारे ऊपर बहुत बड़ा उपकार है।

शेष पृष्ठ 7 पर....

hearyasamaj.org



# स्व. श्री बलवन्तसिंह आर्य (मकड़ौली कला) का संक्षिप्त जीवन परिचय

## जन्म एवं बाल्यकाल

हरियाणा के प्रसिद्ध रोहतक जिले के मकड़ौली कलां नामक गाँव में मध्यमवर्गीय किसान पिता श्री हरकेराम व माता श्रीमती ग्यानोदेवी के घर सन् 1919 में ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की षष्ठी के दिन आपका जन्म हुआ। जन्म के पाँच मास बाद ही आपकी जन्मदातृ माता का स्वर्गवास हो गया था। दादी और पिता की छत्रछाया में लालित-पालित होने का सौभाग्य भी आपको स्वल्प कालिक ही मिला। दस वर्ष की स्वल्पायु में पिता का साया उठा तो एकमात्र पालिका दादी माँ का डेढ़-दो वर्ष बाद ही देहान्त हो जाने से बालक बलवन्त सिंह परिवारजनों की स्नेह-छाया से वंचित हो गये। घर पर कृषि कार्य अच्छा था, रिश्तेदारों ने घर को सम्भाला और मातृ-पितृ विहीन छोटे बालक बलवन्त सिंह को भी कृषि कार्यों में लगा दिया तथा 12-13 वर्ष की अल्पायु में ही उनका विवाह कर दिया गया।

## युवावस्था-पतन और उत्थान

श्री बलवन्त सिंह का न तो कोई मार्गदर्शक था न ही कोई अनुशासक था। बाल्यकाल की विकट परिस्थितिवश शिक्षा ग्रहण करने का भी कोई अवसर नहीं मिला, कृषि कार्य अच्छा होने से घर में कोई अभाव नहीं था, अत: कुसंग व पतन की भूमिका बननी स्वाभाविक थी। स्वार्थी व नशेड़ी व्यक्तियों का संग निरन्तर बढ़ता गया और परिणामस्वरूप आप हुक्का, शराब, सुल्फा आदि नशों से ग्रस्त होकर पतन की गहरी खाई में गिर गये। लगभग 15 वर्ष की आयु से लेकर 30 वर्ष की आयु तक आप इस पतन के अन्धकार में गोते लगाते रहे जिससे धन व स्वास्थ्य की पर्याप्त हानि हुई। इन व्यसनों के होते हुये भी एक विशेष गुण आप में था कि आपकी बैठक ऐसे मुख्य मार्ग पर थी जहाँ से धामड़, रिठाल, जौली, लाठ, कान्हीं आदि गाँवों के रोहतक बैलगाड़ियों से आने-जाने वाले व्यक्तियों का ठहरने और हुक्का-पानी पीने व विश्राम करने का वह एकमात्र केन्द्र-स्थल था। उन सबकी आप हुक्के-पानी आदि से भरपूर सेवा करना अपना गौरव समझते थे। सेवा से मिलती है मेवा की कथनी के अनुसार सौभाग्य के द्वार खुलने की आहट आपने सुनी। आहट थी आर्यसमाज के प्रति लगाव की, उसी के प्रति बढ़ती जिज्ञासावश या पूर्वजन्म के सौभाग्य-वश आपने 30 वर्ष की आयु में संयोगवश रोहतक में आर्यसमाज के किसी कार्यक्रम में पं० रामचन्द्र देहलवी जो आर्यसमाज के प्रसिद्ध वक्ता व शास्त्रार्थ महारथी थे उनका व्याख्यान सुना, तथा उसी दिन से दृढ़ संकल्प के साथ सब शराब आदि दुर्व्यसनों का परित्याग कर आर्य सज्जनों की मण्डली के सदस्य बन गये तथा सन् 1953 में आर्यसमाज के यशस्वी भजनोपदेशक पं. बस्तीराम आर्य को गांव में आमन्त्रित कर स्वयं तथा अपने 17 साथियों सहित उनके करकमलों से विधिवत् यज्ञोपवीत ग्रहण कर निष्ठावान आर्य बनकर उत्थान की ओर अग्रसर हुये।

## दृढ़संकल्प के धनी

आपके स्वभाव में दृढ़ संकल्पशीलता का गुण जन्मजात था। जिस कार्य या गुण को आपने मन-बुद्धि से स्वीकार कर लिया। उसे हर परिस्थिति में प्राण-पण से आजीवन निभाया। आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को पढ़ने का निश्चय कर आपने खेती व पशुपालन करते हुये ही गाँव के ही पं. अमरसिंह जी से 35 वर्ष की आयु में हिन्दी पढ़ना सीखकर ऋषि ग्रन्थों का आजीवन स्वाध्याय किया। अपने गाँव में तथा आस-पास के गाँवों में आर्यभजनोंपदेशकों का प्रचार कराते उनसे उपदेश सुनकर तथा वैदिक पुस्तकों के स्वाध्याय के प्रभाव में आकर नित्यप्रति दोनों समय सन्ध्या व यज्ञ करने का संकल्प कर लिया जिसे आपने विकट से विकट स्थिति या दशा में भी मृत्युपर्यन्त श्रद्धा से निभाया। गुरुकुल झज्जर में स्वामी ओमानन्द जी के मुख से एक बार सुन लिया कि नमक, मिर्च मसाले व मीठा खाना अच्छा नहीं है, आपने उसी दिन से अपने भोजन में नमक-मिर्च, मासले व मीठे का प्रयोग बन्द कर दिया जिसे लगभग 60 वर्ष तक निभाया। वृद्धावस्था में वैद्यों के परामर्श से मीठा प्रारम्भ किया। गाँव में साँग नहीं होने देने का संकल्प कर लिया तो कर लिया। अपने साथियों की टोली बनाई पहले गाँव में आये साँग करने वालों को चेतावनी दी उससे बात नहीं बनी तो आर्य-टोली ने पीट-पीट कर साँगी भगा दिये, गाँव के विरोध की कोई परवाह नहीं की। आर्यसमाज के प्रभाव में आकर अपने गाँव के भारी विरोध के बावजूद गाँव की घेराबन्दी व लोहे को न छूने के विशेष दिन के टूणे को डंके के चोट के साथ तोड़ दिया तथा धार्मिक अन्धविश्वास की जड़े हिला दी। इसी प्रकार आर्यसमाज के सबके प्रति समानता के व्यवहार व सिद्धान्त को अपने गाँव में लागू करने का संकल्प करके आपने अपने हैण्ड पम्प व कूप पर सभी जातियों के स्त्री-पुरुषों के पानी प्रयोग करने की खुले रूप से घोषणा कर उसको कार्यरूप दिया। गाँव में व्याप्त इस छूआछूत के अभिशाप को खत्म करने का आपने भरपूर प्रयास किया व अनेक हरिजन भाईयों को यज्ञोपवीत प्रदान कर आर्यसमाज का सदस्य व अधिकारी बनाया। इसका गाँववासियों ने भारी विरोध किया व आपको बलवन्त सिंह जाति भ्रष्ट हो गया है ऐसा प्रचारित किया पर आपके स्वभाव में पीछे हटना नहीं था, आपने निरन्तर इस सुधार कार्य को जारी रखा।

## आर्यसमाज के कार्यक्रमों में सक्रियता

आप कठोर परिश्रमी स्वभाव के थे। 15 एकड़ की खेती करते 20-25 गायों का पालन करते साथ ही अपनी दोनों समय यज्ञ व सन्ध्या करने की दिनचर्या पूर्ण करते और आर्यसमाज के प्रत्येक सामाजिक आन्दोलनों मे दल-बल के साथ भाग लेते थे। सन् 1957 में आर्यसमाज द्वारा चलाये गये हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में आप गांव के प्रतिष्ठित आर्यसमाजी श्री वैद्य रामस्वरूप जी के नेतृत्व में सत्याग्रही बनकर जेल में रहे तथा विजयी होकर लौटे। सन् 1966 में आर्यसमाज द्वारा चलाये गये गोरक्षा आन्दोलन में भी आप अपने साथ 35 गौ-रक्षकों को लेकर जेल गये। स्वामी ओमानन्द जी के आह्वान पर आप सोनीपत के कुण्डली गौव में निर्माणाधीन हत्थे को तुड़वाने के दल में भी गये। स्वामी ओमानन्द जी व श्री प्रो० शेरसिंह जी के नेतृत्व में आयोजित शराबबन्दी आन्दोलनों में आपने बढ़-चढ़ कर भाग लिया एवं अपने गांव मकड़ौलीकलां में सन् 1984 में आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण कराया।

## गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति श्रद्धा

आप गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को श्रेष्ठ मानते थे, सबको अपने पुत्र-पुत्रियों को वहां पढ़ाने की प्रेरणा देते थे तथा स्वयं अपनी तथा अपनी बहिन समाकौर के सभी पुत्र-पुत्रियों को गुरुकुल झज्जर व कन्या गुरुकुल नरेला में पढ़ाया जो आज सभी गुरुकुल को स्नातक व स्नातिका बनकर सुस्थापित हैं तथा एक पुत्र आचार्य विजयपाल जी नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर गुरुकुल झज्जर का संचालन कर रहे हैं तथा वर्तमान में आर्यप्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान के रूप में आर्यजगत् की सेवा कर रहे हैं।

## दानशीलता

आप ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के दीवाने थे। आर्यसमाज के सत्संग से आपके सब दुर्व्यसन छूट गये थे और आप स्वभाव से कठोर मेहनती थे। अत: कृषि में आय भी अच्छी होती थी जिसमें से आप विभिन्न संस्थाओं में आर्थिक दान देते थे तथा साथ ही निम्नलिखित संस्थाओं को प्रतिवर्ष फसल पर अन्नदान भी करते थे।

1. गुरुकुल झज्जर को प्रतिवर्ष 7 क्विंटल गेहूं।
2. गुरुकुल लाढ़ौत को प्रतिवर्ष 1 क्विंटल गेहूं।
3. आर्ष गुरुकुल आश्रम सुन्दरपुर को प्रतिवर्ष - 1 क्विंटल गेहूं।
4. दयानन्दमठ रोहतक को प्रतिवर्ष- 1 क्विंटल गेहूं।
5. आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को प्रतिवर्ष - 1 क्विंटल गेहूं।
6. अनाथालय दयानन्द मठ को प्रतिवर्ष - 1 क्विंटल गेहूं।
7. खड़वाली गोशाला को प्रतिवर्ष-1 क्विंटल गेहूं।

इसके अतिरिक्त विभिन्न आर्य सम्मेलनों में दल-बल सहित भाग लेते व दान देते थे।

## सामाजिक मूल्यों व आदर्शों की स्थापना

आप रहन-सहन व जीवन के हर क्षेत्र में जैसे विवाह-दहेज मुक्ति आदि के व्यावहारिक व सामाजिक कार्यों में पहले स्वयं अपने जीवन व परिवार के माध्यम से आदर्श स्थापित करते तथा फिर ओरों को वैसा करने की प्रेरणा देते। आपने विवाह में प्रदर्शन, नाच-गान व दहेज आदि की कुप्रथा को दूर करने के लिए जहां दूसरों को सदा प्रेरित किया। वहां अपने व अपनी बहिन के सभी पुत्र-पुत्रियों के विवाह केवल पाँच आदमियों से तथा केवल एक बार एक रुपया लेकर पूर्ण दहेज मुक्त और प्रतिष्ठित आर्य परिवारों में किये।

## स्वर्गवास (निधन)

आप 96वें वर्ष में चल रहे थे, शरीर में कोई पीड़ा व घातक बीमारी नहीं थीं, प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ व संन्ध्या करते थे। वृद्धावस्था के कारण कुछ महीनों से घूमना-फिरना बन्द हो गया था, मिलने वालों को सदैव अन्तिम अवस्था तक आर्यसमाज का प्रचार करने व सन्ध्या हवन करने की शिक्षा व प्रेरणा देते रहते थे। दिनांक 4 जून 2014 को प्रात: मुहूर्त में 3 बजकर 47 मिनट पर आपने अपनी जीवन-यात्रा पूर्ण की।

thearyasamaj.org



**वेदमन्त्र**

**एतद् वा उ स्वादीयो यदधिगवं क्षीरं वा मासं ना तदेव नाश्नी-यात्॥**

अथर्ववेद 9/6/9

**शब्दार्थः**-(एतद् वा उ) वही खाद्य पदार्थ, (स्वादीयः) रुचिकर, स्वादिष्ट, लाभकारी होता है, (यत्) जो, (अधिगवम्) भूमि से फल, फूल, अन्न, शाक, कन्द, मूल आदि प्राप्त होता है, (वा) अथवा, (क्षीरं) जो गाय आदि पशुओं से दूध, दही, घी आदि के रूप में मिलता है, (मांसम्) जो पशु-पक्षी, मछली आदि को मारकर मांस प्राप्त होता है, (वा) अथवा जो पशु-पक्षी आदि के गर्भ, अण्डे होते हैं, (एव) वह भी वैसा ही अभक्ष्य है, (तद्) वह, (न) नहीं, (अश्नीयात्) खाना चाहिए।

**व्याख्या**—मनुष्यों को जीवित रहने के लिए क्या खाना चाहिए और क्या नहीं, इस विषय में वेदों में सैकड़ों मन्त्र आये हैं। उनमें सैकड़ों प्रकार के अन्न, शाक, कन्द, मूल, फल, वनस्पति, औषधि, लता, गुल्म आदि का नाम गिना-गिनाकर खाने का विधान किया है। तदुपरान्त वेद की व्याख्या रूप में

# भक्ष्याभक्ष्य

जो उपवेद हैं जिनमें आयुर्वेद भी है उसमें बड़े विस्तार से एक-एक पदार्थ के गुण धर्म-स्वभाव को बताकर उनकी उपयोग विधि का भी सरल और स्पष्टरूप से वर्णन किया गया है। ऋतु, देश, काल, परिस्थिति, बल, अवस्था आदि सभी बातों को ध्यान में रखते हुए भक्ष्य-अभक्ष्य का विधान किया है। आज विश्व में भोजन के विषय में दो पक्ष मुख्य हैं—प्रथम यह कि जलचर, नभचर, थलचर किसी भी प्राणी को चाहे वह पशु हो, पक्षी हो, कीट हो, पतंग हो, मछली हो या अन्य कोई उसे पकड़कर, मारकर, साफ-सफाई करके पकाकर खाया जा सकता है। इसमें कोई हिंसा नहीं है क्योंकि इनमें आत्मा नहीं है और ये सब प्राणी मनुष्यों के खाने के लिए ही बनाये गये हैं।

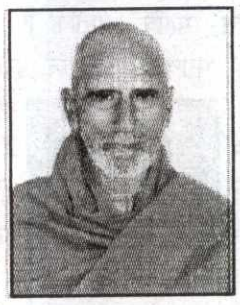

दूसरा पक्ष यह है कि उपर्युक्त मनुष्य सदृश शरीर हाथ, पांव, आंख, नाक, कान, पेट आदि अवयव वाले तथा सुख-दुःख की अनुभूति करने वाले उसी की तरह श्वास-प्रश्वास लेने वाले, बच्चे पैदा करने वाले उसी की तरह श्वास-प्रश्वास लेने वाले, बच्चे पैदा करने वाले, उनका लालन-पालन करने वाले, सोने-जागने वाले, मरने-जीने वाले, भय-प्रेम करने वाले पशु-पक्षियों में मनुष्यों की तरह ही आत्मा है। इनको मारने से हिंसा होती है क्योंकि ये प्रत्यक्ष ही मारते समय भयभीत हो जाते हैं, चिल्लाते हैं, दौड़ते हैं, दुःखी होते हैं। इन्हें मारकर खाना हिंसा है, अधर्म है, पाप है।

वैदिक सिद्धान्त मांस भक्षण के निषेध का है। प्रस्तुत मन्त्र में स्पष्ट निदेश है कि जो भूमि माता की गोद में विभिन्न प्रकार के गेहूं, चावल, चना आदि अन्न उत्पन्न होते हैं, आम, अंगूर, केला, सन्तरा आदि फल, पेड़ों, लताओं, गुल्मों में लगते हैं या अन्य प्रकार के लौकिक तोरी, भिण्डी आदि सब्जियां उत्पन्न होती हैं या आलू, मूली, अदरक आदि कन्द उत्पन्न होते हैं। उनको खाना चाहिए अथवा गाय, भेड़, बकरी आदि पशुओं के दूध और दूध से बने दही, मक्खन, मलाई, घी, मावा, पनीर आदि खाना चाहिए। पशु-पक्षी आदि आत्मा वाले जीवित प्राणियों को मारकर नहीं खाना चाहिये।

मनुष्यों को कतलखाने में जाकर प्रत्यक्ष रूप में पशु-पक्षियों को मरते हुए, काटते हुए दिखाया जाये तो निश्चित है कि अधिकांश व्यक्ति मांस-भक्षण छोड़ देंगे। ऐसा इंग्लैण्ड देश में हुआ था। बच्चों ने टी.वी. पर Slaughter House में पशुओं को कटता देखकर मांस खाना बन्द कर दिया। वैदिक धर्म में किसी भी पशु-पक्षी को मारना इतना ही घातक है जितना मनुष्य को या उसके बच्चे को मारना। बल्कि वेद में तो गाय आदि अत्यन्त परोपकारी पशुओं को मारने वालों को मृत्युदण्ड देने का विधान है। आज के प्रसिद्ध पाश्चात्य वैज्ञानिक, डॉक्टर, बुद्धिजीवियों ने मांसाहार के कारण होने वाले अनेक प्रकार के रोगों के नाम बताये हैं। अमेरिका, यूरोप आदि सभ्य कहलाने वाले देशों में अब शाकाहार बढ़ता जा रहा है। मनुष्य मांसाहारी प्राणी नहीं है। यदि कोई व्यक्ति शब्द प्रमाण को न भी स्वीकार करें तो तर्क युक्ति से हम स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य एक मांसाहारी प्राणी हो ही नहीं सकता है।

**पहला**—धरती पर जितने भी मांसाहारी प्राणी हैं वे जीभ से लप-लपाकर पानी पीते हैं। मनुष्य घूंट-घूंटकर पानी पीता है। **दूसरा**—मांसाहारी प्राणी रात के अन्धेरे में देखते हैं, चलते हैं, परन्तु मनुष्य को रात में दिखाई नहीं देता है। **तीसरा**—मांसाहारी प्राणियों के शरीर में से पसीना नहीं आता है। जैसे कि मनुष्यों के शरीर में से पसीना निकलता है। **चौथा**—जितने भी मांसाहारी प्राणी हैं उनके बच्चे पैदा होते हैं तो आंखें कई दिनों तक बन्द रहती हैं परन्तु मनुष्य के बच्चों की थोड़े से ही काल में आंखें खुल जाती हैं। **पांचवां**—मांसाहारी प्राणियों के दांत नुकीले और चुभने वाले होते हैं, जबकि मनुष्य के सीधे सपाट होते हैं।

**छठा**—मांसाहारी प्राणियों के शरीर की आंतें शरीर के परिमाण से बड़ी होती हैं, शाकाहारियों की नहीं होती हैं। **सातवां**—मांसाहारी प्राणियों का मेदा बड़ा होता है, शाकाहारियों का नहीं। **आठवां**—मांसाहारी प्राणियों की आकृति, बनावट भयानक और डरावनी लगती है, जबकि शाकाहारियों की नहीं। ईश्वर करे हम सत्य को खोजकर पशुओं को मारकर खाने की हिंसक परम्परा को समाप्त करने में अग्रसर हों और पृथ्वी को हिंसा के महाताण्डव से बचाकर शान्ति का साम्राज्य स्थापित करें।

—आचार्य बलदेव

# चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, गुरुकुल झज्जर एवं आर्यवीर दल हरियाणा द्वारा गाँव-गाँव में चलाए जा रहे आसन-प्राणायाम, व्यायाम एवं चरित्र निर्माण शिविरों की कड़ी में गाँव बालन्द के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रचारमन्त्री एवं गुरुकुल झज्जर के उपाचार्य के द्वारा साप्ताहिक आसन, प्राणायाम, व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर लगाया जा रहा है जिससे रोग, नशा, दुर्व्यसन, भ्रष्टाचार, व्यभिचार मुक्त एवं स्वस्थ, समृद्ध संस्कारयुक्त दिव्य समाज का निर्माण हो सके उपाचार्य चन्द्रदेव ने आज शिविर में भाग ले रहे 176 शिविरार्थियों को कद बढ़ाने हेतु पश्चिमोत्तानासन, सर्वांगासन, हलासन, चक्रासन, धनुर्रासन, त्रिकोणासन, शीर्षासन व ताडासन के साथ-साथ बाह्य प्राणायाम, अनुलोम-विलोम, भस्त्रिका, भ्रामरी, कपालभाँति एवं न्यौली क्रिया व सूक्ष्म व्यायामों का भी क्रियात्मक अभ्यास करवाया।

उपाचार्य ने कहा कि आज की भागदौड़ भरी व्यस्त दिनचर्या में भी तनावमुक्त, स्वस्थ मन व शरीर रखने हेतु 24 घण्टे में से कम से कम एक घण्टा अपने स्वास्थ्य के लिए नहीं लगाता तो आने वाले समय में डाक्टर के बैड के लिए कई घण्टे निकालने पड़ेंगे और साथ में नोट भी। पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में हो माया, तीजा सुख पतिव्रता नारी, चौथा सुख पुत्र आज्ञाकारी, पांचवां सुख राज में पासा, छठा सुख सत्संग में वासा, सातवां सन्तोषी मन, आठवां सुख लगे प्रभु में लगन। बिना निरोगी काया के अन्य सुख फीके हैं। अतः हमें तन, मन से स्वस्थ रहने हेतु आसन-व्यायाम, प्राणायाम अपनी दिनचर्या के अंग बना लेने चाहिएं।

शिविर में सैकड़ों बच्चों, युवाओं के साथ बालिकायें व बेटियां भी आसन-व्यायाम, प्राणायाम, सूर्यनमस्कार, सर्वांग-सुन्दर व्यायाम के साथ-साथ जूडो-कराटे व आत्मरक्षा का प्रशिक्षण ले रहे हैं। शिविर में रितेश शास्त्री, उदय आर्य, राहुल फरमाणा, राजेश आर्य सहयोगी शिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं। शिविर लगाने में बहन राजबाला आर्या, रामवीर शास्त्री, कृष्ण मिस्त्री, मंजीत आर्य, नसीब आर्य, भगवान सिंह, सोमदेव शास्त्री, महिपाल शास्त्री, अशोक पहलवान जयदेव शास्त्री, माता कृष्णा आर्या, ग्राम पंचायत एवं समस्त ग्रामवासियों का भरपूर सहयोग मिल रहा है। शिविर का समापन 27 जून को सायं 5 से 8 बजे तक होगा जिससे शिविरार्थियों द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन भी होगा।

# वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **97वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 13 जुलाई 2014, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

**आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : डॉ. जगदेव विद्यालंकार, रोहतक**

**कार्यक्रम-13 जुलाई 2014 प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक**

**यज्ञ, भजन, प्रवचन**

**निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)**

thearyasamaj.org



# भारतीय संस्कृति की विशेषता व पहचान पुरुष परिधान धोती

❑ मनमोहन कुमार आर्य

आज से लगभग 1200 वर्ष पूर्व समय था जब सारे देश में पुरूष धोती पहनते थे। आज का समय है जब बहुत कम संख्या में ग्रामीण व यत्र-यत्र नाम मात्र लोग धोती पहनते हैं। महात्मा गांधी व अनेक प्रमुख नेता धोती पहनते थे। हमारे पहले प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू नेशायद ही कभी धोती पहनी हो। आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता का तो देश की सन् 1947 व उसके बाद प्रभाव पड़ा ही है, हो सकता है कि नेहरूजी भी कुछ सीमा तक भारत में पैण्ट के प्रभाव के बढ़ने में कारण रहे हों? महात्मा गांधी विदेश में तो अंग्रेजी वस्त्र में दिखाई दे जाते हैं परन्तु स्वतन्त्रता संग्राम आन्दोलन से जुड़ने के बाद उन्होंने प्रायः धोती ही पहनी थी। नेहरूजी के बाद उनकी पुत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी भारत की प्रधानमत्री बनी, वह सदा भारतीय महिलाओं की वेशभूषा में ही नजर आती थीं। इन्दिराजी के बाद राजीव गांधी प्रधान मंत्री बने। हो सकता है उन्होंने किसी विशेष अवसर पर धोती पहनी हो परन्तु उन्हें धोती ने कभी आकर्षित किया हो, हमें पता नहीं। राजीवजी के कार्यकाल के बाद व बीच में चन्द्रशेखर जी अवश्य धोती में दिखाई देते रहे। चौधरी चरणसिंह जी, श्री जगजीवनराम जी, श्री अटल बिहारी वाजपेई धोती में दिखाई देते रहे। प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद जी धोती पहनते थे। धोती में ऐसी कौन सी कमियां हैं व पतलून व चूड़ीदार पजामें में ऐसी कौन सी खासियतें हैं कि लोग धोती के स्थान पर इन वस्त्रों को तरजीह देते हैं, सम्प्रति इस पर विचार करना उचित होगा।

हम वैज्ञानिक सोच के मानने वाले हैं। हमें जीवन हर कार्य व व्यवहार विज्ञान अर्थात् तर्क व गुण-दोष के आधार पर करना चाहिये, यह हमें अभीष्ट है। हम धोती के बारे में विचार कर रहे है तो इसलिए कि हमें लगता है कि किसी भी विषय पर विचार करना चाहिये यदि उसमें कुछ लाभ हो सकता है, अस्तु। हम समझते हैं कि हमारे सभी पुरूष नेताओं को सदैव वा यदा-कदा धोती अवश्य पहननी चाहिये। सृष्टि को बने हुए 1 अरब 96 करोड़ वर्ष हो चुके हैं। हमारा अनुमान व विश्वास है कि इतने वर्षों तक, ईसा की आठवीं शताब्दी से पूर्व तक, देश के पुरूषों में तो धोती का प्रचलन शत-प्रतिशत रहा ही है, विश्व के अनेक या सभी देशों में भी रहा है या रहा होगा। आदि ऋषि ब्रह्मा, महर्षि मनु, गौतम, कपिल, कणाद, व्यास, पतंजलि, पाणिनी, भगवान राम व भगवान कृष्ण, महर्षि बाल्मिकी, गुरू रविदास, महर्षि दयानन्द, भगवान महावीर, भगवान महावीर, अर्जुन, युधिष्ठिर, चाणक्य, सरदार पटेल, लाल बहादुर शास्त्री, स्वामी विवेकानन्द आदि सभी धोती पहनते थे। यदि इन लोगों को धोती में किंचित भी कष्ट या असुविधा होती तो यह अवश्य ही इसे छोड़कर अन्य वस्त्रों का अनुसंधान करते और उन्हें अपनी वेशभूषा में सम्मिलित करते। परन्तु इन ज्ञानी, विज्ञ पुरूषों ने इसकी आवश्यकता नहीं समझी। हमें लगता है कि अंग्रेजों के आने के बाद गुलामी की मानसिकता रखने वाले लोगों ने पैण्ट आदि वेशभूषा को अंगीकार किया। यदि गले में पहनी जाने वाली टाई को लें तो भारतीय परिस्थिति में तो इसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है। यह अनावश्यक, नकल, गुंलामी का प्रतीक व हीन-मानसिकता की भावना को प्रदर्शित करती है और स्वत्व की भावना का विरोध करती दिखाई देती है। गले में टाई का पहनना एक दिखावा मात्र है और इसे पहन कर स्वयं को दूसरे से ऊपर समझना या दूसरों को अपने से नीचा समझना, इस प्रकार की मानसिकता कहीं न कहीं, कुछ कम या अधिक प्रतीक होती है। यह एक प्रकार से अंग्रेजी पढ़ने का संस्कार भी है। स्वामी दयानन्द ने लिखा व कहा है कि हम जिस भाषा को पढ़ते हैं, उसी भाषा से जुड़ी संस्कृति का संस्कार उस पढ़ने वाले पर होता है। हम लोगों ने अंग्रेजी पढ़ी और साथ में अंग्रेजी संस्कार स्वतः ही हमारे अन्दर आ गये और हमने पूर्वजों व स्वसंस्कृति को छोड़ कर पर-संस्कृति व वेशभूषा को ग्रहण कर लिया इससे, दूसरों की नकल करने के कारण, हम विदेशियों से अल्प बुद्धिवाले सिद्ध होते हैं। इसी कारण से हम अपने लगभग 2 अरब वर्ष के इतिहास व इस लम्बी अवधि तक, ईसा की आठवीं शताब्दी से पूर्व तक, धोती को वेशभूषा के रूप में प्रयोग करने वाली पीढ़ियों को भी एक प्रकार से अपमानित कर रहे हैं। हम सभी विज्ञ पैण्टधारी लोगों से पूछना चाहते हैं कि धोती पहनने वाले क्या पूर्व काल के सभी लोग जानबूझकर असुविधा झेलते रहे और क्या परम्परा या किसी अन्य कि निजी स्वार्थ, अन्धविश्वास आदि के कारण धोती से ही जुडें रहे? हमें इस बात में सार नजर नहीं आता अपितु लगता है कि उनका धोती को अपनाना उनके बुद्धिमान होने का प्रमाण है। धोती भारतीयता का प्रतीक है। हमारे आदर्श हमारे धार्मिक विद्वान, पुरोहित, राजनेता या फिर फिल्मी कलाकार होते हैं। यह जो पहनते हैं उसकी नकल देश भर के लोग व जनता करती है। अतः इन्हें सावधान रहकर व देश की परम्परा, धर्म व संस्कृति को ध्यान में रखकर ही सही वस्त्रों व वेशभूषा का चयन करना चाहिये।

मनमोहन कुमार आर्य

आर्थिक पहलू से विचार करें तो धोती सस्ती व मबवदवउपबंस है। धोती वैसे ही सस्ती है और इसे टेलर को पैसे देकर सिलाई नहीं करानी पड़ती। इस प्रयोग अधोवस्त्र के रूप में पहनने में, ओढ़ने व बिछाने में तथा यदि कुछ सामान आदि है तो उसे गठरी बना कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में भी किया जा सकता है। एक धोती से पूरा शरीर ढक जाता है। गरीब लोगों के लिए धोती वरदान है। संसार में धोती के मुकाबले अन्य कोई वस्त्र दिखाई नहीं देता और न है। धोती का एक गुण यह है धोती धारी पुरूष शौच करते समय बैठना होता है जो कि भद्रता व शिष्टता का प्रतीक है जबकि पैण्ट पहनने के इसके विपरीत खड़े होकर यह व्यवहार करते हैं जो कि अभद्र अनुभव होता है। हमने देखा है कि आर्य समाज के सभी विद्वान जो वेदों व दर्शनों तथा सामाजिक विषयों पर सारगर्भित व समाजोत्थान पर उपदेश, प्रवचन व व्याख्यान देते हैं वह प्रायः सभी धोती पहनते हैं। आर्य समाज में पुरोहितों व भजनोपदेशकों का महत्वपूर्ण स्थान है। सभी धोती को धारण करते हैं एवं शोभायमान होते हैं। आधुनिक काल होने पर धार्मिक श्रद्धालु वर्ग पुरोहित को धोती से भिन्न वस्त्र का स्वीकार नहीं करता। धोती पहिनना वैदिक आर्य हिन्दू समाज में एक प्रकार से धार्मिक विषयों में ज्ञानी होने कि निशानी बन गई है।

धोती बार बार धोये जाने व पहनने के कारण धोती कहलाती है। धोती को समाज व देश में बढ़वा मिलना चाहिये। इसके लिए धार्मिक व विद्वान प्रवचनकर्ताओं को प्रचार करना चाहिये। विदेशी वेश-भूषा का कम से कम प्रयोग हो, इसका भी प्रचार होना चाहिये। हमारे राजनीति से जुड़े लोगों को अधिक से अधिक भारतीय वेषभूषा जिसमें धोती प्रमुख है, इसे धारण कर जनता में उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिये। राजनैतिक दलों को प्रयास करना चाहिये कि वह स्वयं तो धोती पहने ही, विदेशों में भी इसे व्यवहृत करने या प्रमोट करने करने के लिए प्रयास करें। आजकल ख्याति प्राप्त व्यक्ति चाहे वह राजनीति, फिल्म व खेलों से जुड़े हों लोग उनका ही अन्धानुकरण करते हैं। इस मनोविज्ञान को ध्यान में रख कर धोती का प्रचार किया जाना चाहिये। हम प्रधानमंत्री श्री नेरेन्द्र मोदर से भी अपेक्षा करते हैं कि वह भी धोती को महत्व दें जिससे उनका नाम भी उन नेताओं में सम्मिलित हो सके जो धोती का समय-समय पर अधिकांश प्रयोग करते थे। यदि मोदीजी धोती को अपने निजी व सरकारी जीवन में महत्व देगें, जो कि पहनावें में महर्षि दयानन्द व महात्मा गांधी का अनुकरण कहा जा सकता है, तो इससे धोती को सर्वत्र व्यवहृत करने और पुनः नया इतिहास बनाने में लाभ होगा व इसका प्रभाव पड़ेगा। उनकी पार्टी के पैण्टधारी व्यक्तियों पर भी इसका अनुकूल परिणाम होगा, इसकी कल्पना की जा सकती है। हम पाठक मित्रों को यह भी बताना चाहते हैं कि जिन बन्धुओं को धोती बांधना या पहिनना न आता हो वह इण्टरनैट पर जाकर धोती बांधने की विधि लिख कर सर्च कर सकते हैं। लवनजनइम पजम में बांधना सीखने की आडियों व वीडियों उपलब्ध है जिसका लाभ उठा सकते हैं।

हमने धोती के महत्व व इसे लोकप्रिय बनाने के लिए कुछ पंक्तियां लिखी हैं। विद्वान महानुभाव हमसे अच्छा व प्रभावशाली लिख सकते हैं जिसके लिए हम उनसे अनुरोध करते हैं। हम आशा करते हैं कि हमारी सद्भावना का कुछ प्रभाव अवश्य होगा। कहावत है कि पिजवतल तमचमंज पजेमस अर्थात् इतिहास स्वयं को दोहराता है।

हम समझते हैं कि ईसा की आठवीं शताब्दी से पूर्व 1 अरब 96 करोड़ वर्षों तक भारत का जो पहरावा रहा है वह आधुनिक काल बीत जाने व प्रकृति के प्रमुख संसाधनों के कम, सीमित या समाप्त हो जाने पर पुनः धोती का युग ला सकता है। धोती भारतीय संस्कृति की आत्मा व पहचान है, इसे हृदय में स्थापित कर जब हम जीवनयापन करेगें तो परिणाम अनुकूल होगें। हम पुनः स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम किसी प्रकार के पहनावे के विरूद्ध कदाचित नहीं है, परन्तु इतिहास की अच्छी बातों को मानना, उसका अनुकरण व अनुसरण करना हमें अभीष्ट है।

196, चुक्खूवाला-2, देहरादून

thearyasamaj.org



# सुख-समृद्धि को बढ़ाने वाले गुण

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला ( हरयाणा )

यह कटु सत्य है कि दुःख कोई नहीं चाहता, परन्तु दुःख न चाहते हुए भी आते हैं, उनको कोई रोक भी नहीं पाता है, क्योंकि दुःख जो प्राप्त हो रहे हैं, वे पूर्वकाल में किये हुए कर्मों का फल है, वह ईश्वर की न्यायव्यवस्था अनुसार न चाहते हुए भी भोगना पड़ता है। इसको संसार की कोई शक्ति टाल नहीं सकती, क्योंकि ईश्वर के नियम अटल हैं, ईश्वर के कार्यों में कोई भी हस्तक्षेप करने वाली शक्ति विश्व में आज तक उत्पन्न नहीं हुई है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात गांठ बांध लेने योग्य यह है कि ईश्वर किसी के पाप क्षमा नहीं करता और न ही पाप धुलते हैं, न ही कटते हैं, न ही इनसे बचने का कोई उपाय है। उपाय सिर्फ भोगना है और भोगने पर ही इनसे छुटकारा मिलता है। अन्य कोई उपाय इसके अतिरिक्त है ही नहीं। हां, जब मनुष्य को यह आभास और विश्वास हो जाएगा कि पापों का फल हर हालत में भोगना पड़ता है तो वह भविष्य में पाप करने से बच जाएगा और जब तक वह इन अज्ञानी गुरुओं से पाप क्षमा का मन्त्र लेकर पाप से बचने का उपाय समझता रहेगा तो पाप पर पाप करता जाएगा। आप बुद्धि से विचार क्यों नहीं करते? ईश्वर ने जानवरों को तो सीमित ज्ञान दिया है, जो उनके लिए पर्याप्त है, परन्तु मनुष्य को तो सर्वश्रेष्ठ बुद्धि सोचने विचारने को अच्छा भला, ठीक-गलत, पाप-पुण्य, हानि-लाभ, यश-अपयश के लिए दी है। अगर कोई बुद्धि से सोचने-विचारने का काम न करे तो इसमें ईश्वर का क्या दोष है? ईश्वर ने तो सबको समान रूप से प्रकृति के सुख साधन दिये हैं, अगर किसी को उसमें कम या ज्यादा मिला है तो वह सिर्फ उसके पाप-पुण्यों के फल के आधार पर मिला है। जहां तक इन गुरुओं द्वारा जो मन्त्र दिये जा रहे हैं, वे मन्त्र नहीं हैं, क्योंकि मन्त्र केवल ईश्वर-कृत वेद में हैं। वेद मन्त्र सारे विज्ञान और ज्ञान से ओतप्रोत हैं। यदि वास्तव में वेद भी ईश्वर आज्ञानुसार कोई पालन कर लेता है तो उसका जीवन सफल हो जाता है। इसीलिए तो वेदवाणी को अमृतवाणी कहा गया है। वेदज्ञान ईश्वर ने दिया ही मनुष्य के कल्याण के लिए है। वेद में एक भी मन्त्र ऐसा नहीं जो मनुष्य को कोई भी अमानवीय कर्म करने की अनुमति देता हो।

अब आपके सामने बाबा आशाराम व उसके बेटे का जीता-जागता उदाहरण है। यदि बाबा आशाराम के पास पाप काटने का वास्तव में कोई बीजमन्त्र है, तो उसने अपने व अपने बेटे के पाप क्यों नहीं काट लिये, क्यों जेल में पड़ा है। अब कहां गई जनता के कष्टों को हरने वाली शक्ति। आज देश की 80% जनता इन बाबाओं के पीछे भाग रही है। कारण यह है कि लोग समझते हैं कि यदि बाबा ने आशीर्वाद दे दिया तो हमारे सब दुःख दूर हो जायेंगे, गरीब की गरीबी हट जायेगी, सन्तानहीन को सन्तान हो जायेगी, कोठी, बंगला, कार जैसी सब सुविधायें आ जायेंगी। रोगी का रोग दूर हो जायेगा। इस प्रकार की जनता की हरेक की अलग-अलग इच्छायें होती हैं और उनकी पूर्ति की इच्छा में बाबा जो कह दें वो करने को तैयार होते हैं, अर्थात् करते हैं। बाबों को जो उनकी गलत गतिविधियों को पनपने में उनका साथ देते हैं, उसे अवश्य बाबे कोई न कोई प्रलोभन अवश्य देते हैं और फिर वही लोग, दूसरे लोगों को फंसा-फंसाकर लाते हैं, जिनको एजेंट कहते हैं। ये सब बातें व्यर्थ में समय, धन व अमूल्य जीवन को बरबाद करने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। यही कटु सत्य है।

सुख पाने के लिए तो ईश्वर ने वेदज्ञान दिया है, वेद लोग न तो पढ़ते हैं और न ही वेदज्ञान की बात सुनते हैं। वेदज्ञान की बातें तो आर्यसमाज के सत्संगों में बतलाई जाती है, वहां लोग जाते नहीं, क्योंकि लोगों को सत्य बातें आजकल हजम नहीं होती, क्योंकि असत्य बातों को सुन-सुनकर हाजमा खराब हो चुका है। सत्य बातों को पचाने अर्थात सहने की शक्ति ही नहीं रही है। जैसे शराबी द्वारा शराब पीने से उसका शरीर बेकार हो जाता है और कोई उसको शराब छोड़ने के लिए कहे तो उसको मारने को दौड़ता है और कई तो कहते हैं अपने घर से पीता हूँ, तेरे बाप का इसमें क्या जाता है? लो कर लो ऐसे लोगों का सुधार। वो कहावत है कि गधे को दिया नमक, कहता है मेरी आंख फोड़ दी। जैसे शराबी शराब का आदी हो जाता है वैसे ही असत्य पर पलने वाले असत्य के आदि हो जाते हैं और वे समझते हैं कि आज के युग में इसके वगैरा गुजारा नहीं है। यह एक गलत धारणा लोगों के दिल में घर कर गई है।

परिवारों में सुख-समृद्धि किस प्रकार से बढ़ सकती है? इस विषय में वेद क्या कहता है—**जनित्रीव प्रति हयासि** (अथर्व० 12, का० 3, सू० 23 मं०) सब स्त्री-पुरुष वेद द्वारा विद्या करके परस्पर प्रीतिपूर्वक रहे और कठिनाइयां आने पर निरन्तर धर्म में जमे रहे, जैसे दृढ़ जमाई गई कढ़ाई भट्ठी या चूल्हे पर तीव्र अग्नि के ताप को सहकर निरन्तर जमी रहती है। पति-पत्नी कभी आपस में विरोध न करे और सदा एकमत होकर ही प्रसन्नता पूर्वक गृहस्थाश्रम को निभाये और परस्पर के अगाध प्रेम से प्रेम उत्पन्न होता है और उस प्रेम का नाम है सन्तान। आम बोलचाल में कहते भी हैं कि यह हमारे प्रेम की निशानी है। जैसे जल अग्नि के संयोग से खौलने अर्थात् उबलने लगता है और उसमें से वाष्पीकरण होने लगता है। ठीक उसी प्रकार से पति-पत्नी के प्रेम मिलन से एक अद्भुत शक्ति प्रकट होती है और वह शक्ति संतान को उत्पन्न करती है। सन्तान गृहस्थ की सुख-समृद्धि और वृद्धि को करने वाली होती है। प्रत्येक गृहस्थी पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन तब तक वैवाहिक नहीं कहलाता जब तक सन्तान की उत्पत्ति न हो। आप समझ सकते हैं कि जिन दम्पत्तियों को सन्तान नहीं होती, उनका क्या हाल होता है? वैसे तो हमारे समाज की आम मनोवृत्ति यही बनी हुई है कि लड़का ही उत्पन्न हो। लड़की के उत्पन्न होने पर मुश्किल से 5% लोग खुश होते होंगे। परन्तु लड़के की ही इच्छा करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि बिना कन्या के आपका वंश कैसे चल पाएगा। लड़की अपने घर में नहीं चाहिए, परन्तु बहू चाहिए। आप ही अन्तर देखिये कि लड़का चाहिए, लड़की नहीं चाहिए। ऐसा क्यों है? यह हमारे समाज द्वारा उत्पन्न की गई कुछ रीति-रिवाज की देन हैं। वह एक तो दहेज सबसे बड़ा कारण है, दूसरा विवाह-शादी के खर्चे, नये-नये शादियों में खाने-पीने के पदार्थ, सजावट के सामान, लेन-देन की प्रथा जो पहले इतनी नहीं थी अब तो बहुत से लोग रिजर्व पराइज रखते हैं, जैसे प्लाटों की ऑक्शन में रिजर्व पराइज रखी जाती है और उससे अधिक बोली देने वाले को प्लाट दे दिया जाता है। कुछ लोग कहते हैं कि कई लड़के को देखने आये थे, एक बीस लाख कह रहा था, दूसरा पच्चीस लाख कह रहा था, अब आप खुद देख लें। यह स्थिति उत्पन्न हो गई है सब जानते हैं और तीसरा लड़के वाले लड़की वालों को अपने से बहुत छोटा समझते हैं। इस प्रकार का सम्बन्ध जैसे कार्यालयों में अधिकारी और एक चपरासी का सम्बन्ध होता है। हो सकता है मेरी सोच गलत हो, परन्तु मैं यह अपने अनुभव की आपबीती बात कह रहा हूँ और आज जो नारी के साथ समाज का व्यवहार है, उससे सब भलीभांति परिचित हैं, मुझे इस सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। इन परिस्थिति को सामने देखते हुए लोग लड़की अपने घर में नहीं चाहते, केवल बहू चाहते हैं। बहू भी कैसी हो? पढ़ी-लिखी, कम से कम डॉक्टर, इंजीनियर और प्रथम चाहत सरकारी नौकरी में हो, अच्छे अमीर घराने की हो, जो दहेज में अच्छा सामान ला सके और घर में अकेली ही हो तो सबसे उत्तम, ताकि सारी उसके माता-पिता की सम्पत्ति भी हमारी ही हो जाये। बहुत संख्या में इस प्रवृत्ति के लोग हमारे समाज में हैं। वेद क्या कहता है—स्त्री पुरुष की आकृति एक-दूसरे से भिन्न है परन्तु परमेश्वर ने दोनों को सामर्थ्यशक्ति समान दी है। कोई अपने को छोटा, कमजोर, अबला, शक्तिहीन न समझे। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। स्त्री के बगैर पुरुष का और पुरुष के बगैर स्त्री का कोई वजूद अथवा अस्तित्व नहीं है। दोनों के परस्पर के संयोग से परिवार बनता है और सन्तान से गृहस्थ का पालन होता है। जो स्त्री को छोटा, कमजोर, शक्तिहीन सोचता है, उसकी सोच परिवार को तोड़ देती है और घर परिवार नहीं नरक का वास बन जाता है, आपस के विरोध से

शेष पृष्ठ 6 पर....

thearyasamaj.org



# वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द का पुनर्गठन

❑ रमेशचन्द्रार्य, पूर्वमंत्री वेदप्रचार मण्डल, जिला जीन्द

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द का गठन तीन वर्ष के लिए होता है। आगामी त्रिवार्षिक गठन के लिये मण्डल की साधारण सभा की बैठक दिनांक 08.06.2014 (रविवार) सुबह 11 बजे आर्यसमाज मंदिर जीन्द शहर में सभा उपमंत्री प्रो० ओमकुमार आर्य की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में आर्यसमाज रामनगर जीन्द, आर्यसमाज जीन्द शहर, जींद जंक्शन, आर्यसमाज सफीदों, मुआना, बूढ़ाखेड़ा, डाहौला, गोहियाँ, घोघड़ियाँ, बिरौली, किनाना, गुसाँईखेड़ा, बहबलपुर आदि से लगभग 25-30 सदस्य उपस्थित थे। मंत्र-पाठ से सभा का शुभारम्भ हुआ, कोषाध्यक्ष श्री सत्यनारायण जी आर्य ने पिछले तीन साल का आय-व्यय का ब्यौरा सभा में प्रस्तुत किया जो सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। मण्डल के महामन्त्री श्री सजय शर्मा की ओर से श्री रमेशचंद्रार्य ने गत तीन वर्षों की गतिविधियां, मण्डल द्वारा करवाये गये प्रचार कार्य एवं विभिन्न आयोजनों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की जिस पर सभी ने संतोष व्यक्त किया और भविष्य में और अधिक प्रभावशाली प्रचार हेतु अपने मूल्यवान् सुझाव दिये। तदनन्तर सभाध्यक्ष के निर्देश पर मण्डल के निवर्तमान प्रधान मा० कपूरसिंह आर्य ने अपनी समस्त कार्यकारिणी का त्यागपत्र प्रस्तुत किया जो अध्यक्ष महोदय ने सधन्यवाद स्वीकार किया तथा सभी उपस्थित सदस्यों ने निवर्तमान कार्यकारिणी की प्रशंसा की कि उन्होंने गत तीन वर्षों के अपने कार्यकाल में बहुत अच्छा कार्य किया है और आगामी तीन वर्ष के लिए भी वही कार्य सम्भालें। लेकिन मा० कपूरसिंह जी ने अपनी कुछ विवशतायें बतलाईं और सबकी सहमति से अग्रलिखित गठन किया गया—

1. संरक्षक - मा० धर्मवीर जी आर्य बहबलपुर
   श्री रामकुमार जी शर्मा, मुआना
2. प्रधान - मा० रायसिंह जी आर्य घोघड़ियाँ
   उपप्रधान - मा० धारासिंह जी आर्य डाहौला
   श्री वीरेन्द्र जी आर्य, बूढ़ाखेड़ा
   श्री कपूरसिंह जी आर्य गुसाँई खेड़ा
3. मंत्री - श्री सञ्जय शर्मा, किनाना
   उपमंत्री - श्री दलवीरसिंह आर्य गोहियाँ
   श्री अशोक गुलाटी जीन्द शहर
4. कोषाध्यक्ष- श्री सत्यनारायण जी आर्य, भिवानी रोड, जीन्द
5. प्रचारमंत्री एवं प्रेस प्रवक्ता-श्री ईश्वरचन्द्र आर्य, प्रियंका प्रिंटिंग प्रेस, जीन्द

कार्यकारिणी में अन्य सदस्यों की नियुक्ति (मनोनयन) के लिये सभी ने सर्वसम्मति से मा० रायसिंह जी आर्य (मण्डल प्रधान) को अधिकृत किया कि वे विचार विमर्श करके नियुक्ति कर लें। बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण में गठन प्रक्रिया सम्पन्न हुई। आर्यसमाज जीन्द शहर के अधिकारियों का धन्यवाद किया गया कि उन्होंने जलपानादि की समुचित व्यवस्था की। नये प्रधान मा० रायसिंह आर्य ने सबसे सहयोग की अपील की। प्रो० ओमकुमार आर्य के संक्षिप्त से अध्यक्षीय भाषण के पश्चात् शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई। उक्त गठन हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान पूज्य आचार्य विजयपाल जी से अनुमति प्रो० ओमकुमार आर्य ने तीन-चार दिन पूर्व प्राप्त कर ली थी।

## सुख-समृद्धि को बढ़ाने वाले गुण.... पृष्ठ 5 का शेष....

कितने अपनी जान गंवा बैठते हैं। अगर कोई मार देता है या मरने के लिए बाध्य कर दिया जाता है। यह एक सोच जो गलत सोचती है, उसका परिणाम है। इसको कहते हैं बिना विचारे जो करे सो पीछे पछताय। एक कवि इसी सन्दर्भ में एक और भी बड़ी पंक्तियां लिखता है—**फिर पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत**'। जब चिड़िया खेत को चुग जाती है तो खेत में क्या दीखता है, केवल रेत ही रेत दिखता है और सब घर उजड़ जाता है तो उसमें क्या दीखता है, खाली दीवारें और वह दीवार फिर खाने को दौड़ती हैं, उस घर में घुसने का जी नहीं चाहता। ये सब परिस्थितियों की उत्पत्ति हमारी गलत सोच के कारण होती है। जिसे कहते हैं—'**विनाशकाले विपरीत बुद्धि**' हम गृहस्थ में रहते हुए भी गृहस्थ के विषय में ज्ञान प्राप्त नहीं करते और एक ओर महर्षि दयानन्द जिसने गृहस्थ में प्रवेश नहीं किया, परन्तु गृहस्थ के विषय में जो उन्होंने वेदों से प्राप्त ज्ञान हमारे समक्ष रखा वह आश्चर्य चकित कर देता है। महर्षि क्या कहते हैं गृहस्थियों को जानने योग्य बात है। स्त्री-पुरुष के सम्बन्ध में महर्षि सत्यार्थप्रकाश के चौथे समुल्लास में लिखते हैं जो एक दूसरे के काम हैं, वह वह आधीनता से ही करने चाहिएं।

# महाविद्वान् महर्षि दयानन्द

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

'**ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका**' में महर्षि दयानन्द जी याज्ञवल्क्य जी को महाविद्वान् महर्षि लिखते हैं। स्वयं स्वामी जी भी महाभारत युग के बाद में महाविद्वान् व महर्षि हुए हैं। योग विद्या से विमान निर्माण विद्या तक उन्होंने रहस्य खोलकर रख दिए। विद्या व योग बल के तप से उन्होंने जो वेद-भाष्य किया उसकी यथार्थता को फिर कोई छू नहीं सका। लेखराम उन्हें पूछते हैं—बिजुली क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न होती है? ऋषि उत्तर देते हैं—विद्युत् सर्व स्थानों में है और रगड़ से उत्पन्न होती है। उनके 'यजुर्वेद' व 'ऋग्वेद' के भाष्य को जो कोई भी श्रद्धा से पढ़ेगा उसे अनायास ही ज्ञान होगा कि स्वामी जी रसायन, जीव, भौतिक विज्ञान तथा आध्यात्मिक विज्ञान के भण्डार थे, पिण्ड, ब्रह्माण्ड की एकरूपता का साक्षात् करने वाले योगी थे।

उनका आयुर्वेद का ज्ञान भी गहन था। स्वामी जी के जीवन चरित्र में हम पढ़ते हैं कि वे ईंट के टुकड़े को तपाकर उसे पानी में बुझा देते थे तथा फिर उस पानी को थोड़ा-थोड़ा करके पीते थे।

इस घटना को पढ़कर इस रहस्य को जानने की मेरी इच्छा रहती थी। पिताजी के गांव में रखे ग्रन्थ 'सुश्रुत', 'चरक' यदा-कदा पढ़ता रहता था। वर्तमान में मैंने दोनों पुस्तकें आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान के माध्यम से प्राप्त की। बड़ा दुखद अनुभव हुआ जब 'सुश्रुत' अध्ययन के दौरान उपरोक्त रहस्य खुल गया। 'सुश्रुत' उत्तरतन्त्रम् अध्याय 48 में तृष्णा-चिकित्सा में दिया है कि अच्छे स्थान की शुद्ध मिट्टी के ढेले या ईंट को गरम कर जल में बुझा के उस जल को पिलाने से वह तृष्णा का शमन करता है।

# चूहड़पुर का वह शिविर

ग्रीष्मावकाश में जगह-जगह आर्यसमाज द्वारा बालक व युवाओं के लिए चरित्र निर्माण शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। ऐसे ही एक शिविर गांव चूहड़पुर जिला जीन्द में जाने का अवसर मिला। मुझे ऐसे क्षेत्रों में बड़ा आनन्द आता है जहां पुरातन ग्रामीण सभ्यता-संस्कृति की महक अब भी विद्यमान है। शिविर का संचालन गुरुकुल झज्जर के स्नातक डॉ० यादराम शास्त्री कर रहे थे। हम सायं लगभग 6.30 बजे वहां पहुंचे थे। गांव से 2 किलोमीटर दूर शास्त्री जी के प्रयास से चार एकड़ जमीन स्टेडियम के लिए मिल चुकी है, उसी जमीन पर इस शिविर का आयोजन था। वहाँ सैकड़ों युवाओं में लगभग 35-30 युवा 20 व 30 वर्ष की आयु के बीच के थे। सभी के सभी अनुशासित यहाँ तक कि शारीरिक भाव-भंगिमा द्वारा भी किसी प्रकार की चंचलता व कुचेष्टा नहीं की। 50 मिनट मैंने अपनी योग्यता अनुसार व्याख्यान दिया। व्याख्यान के बाद डॉ० यादराम शास्त्री ने बड़े बालकों को धन्यवाद के लिए निमन्त्रण दिया तो चार युवाओं ने बड़े सभ्य, संयमित, विश्वस्त ढंग से धन्यवाद किया। उस समय डॉ० यादराम शास्त्री के प्रति कृतज्ञता के उद्गार प्रकट करते हुए मैंने कहा कि आप बड़ा उपकार इस गांव के युवाओं पर कर रहे हो वरन् बोल-चाल, रहन-सहन, खान-पान आदि व्यवहार की शिक्षा के अभाव में ही न जाने कितने अमूल्य जीवन नष्ट हो जाते हैं।

डॉ० यादराम शास्त्री का बालकों पर इसीलिए भी प्रभाव है कि वे स्वयं भी शारीरिक बल प्रदर्शन में दक्ष रहे हैं साथ ही गुरुकुल झज्जर से शास्त्री, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से पी-एच.डी. करने के बाद हरयाणा सरकार अधीनस्थ विद्यालय लैक्चरर पद पर कार्यरत हैं।

hearyasamaj.org



## शोक सदेश

आचार्य विजयपाल जी, सादर नमस्ते।

आपके पिता श्री महाशय बलवन्तसिंह जी आर्य मकडौली कलां के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर अत्यन्त दु:ख एवं शोक की अनुभूति हुई।

आर्योचित गुणों को मन, वचन एवं कर्म से अपने जीवन में अपनाने वाले महाशय जी जैसे व्यक्ति समाज में अब विरले ही शेष हैं। उनका जीवन समाज के लिए एक आदर्श के रूप में था।

संस्कृत की निम्नलिखित सूक्ति :-

**सर्वे क्षयान्ता: निचया: पतनान्ता: समुच्छ्राया:।**
**संयोगा: विप्रयोगान्ता:, मरणान्तञ्च जीवितम्॥**

के अनुसार जीवन का अवसान मरण के रूप में निश्चित है, किन्तु **'कीर्तियस्य स जीवति'** के अनुसार आप जैसे समाजसेवी पुत्र के रूप में महाशय जी आज भी जीवित हैं।

सांसारिक व्यक्ति होने के कारण इतने वर्षों का आत्मिक संयोग होने पर वियोगजन्य दु:ख स्वाभाविक है। अत: **'धीरस्तत्र न मुह्यति'** को अपनाते हुए स्वयं को तथा परिवार को धैर्य बंधावें।

ईश्वर से प्रार्थना है कि वह पूर्णायु प्राप्त दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा परिवार को धैर्य धारण की शक्ति प्रदान करे। **'महाजनो येन गत: स: पन्था:'** के अनुसार हम उनके आदर्शों पर चलें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

दु:ख में सहभागी, ( प्रो० सत्यवीर शास्त्री ) डालावास
पूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

## सूचना

**महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त एवं आर्यसमाज के संघर्षशील स्व० श्री महाशय बलवन्त सिंह आर्य का स्वर्गवास दिनांक 4 जून 2014 को हो गया था। उनके परिवार की इच्छा है कि स्व० श्री बलवन्तसिंह आर्य से सम्बन्धित संस्मरणों एवं जीवन परिचय को पुस्तिका रूप में प्रकाशित किया जावे। तदर्थ सभी आर्यजनों एवं शुभचिन्तकों से आग्रह है कि जिसके पास भी उनसे सम्बन्धित कोई संस्मरण वा विशेष कथनीय घटना उपलब्ध हो, वह कृपया 31 जुलाई 2014 से पूर्व सभा कार्यालय में पहुंचाने का कष्ट करें। –रामपाल आर्य, सम्पादक एवं सभामंत्री**

## महर्षि के मानव मात्र पर.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

**( 4 ) अभिवादन करने का एक ही तरीका 'नमस्ते' है**—वैदिक धर्म का प्रचार जब तक रहा तब तक सभी लोग परस्पर मिलने पर एक ही अभिवादन 'नमस्ते' करते थे। बाद में वैदिक धर्म प्राय: लुप्त होने से अज्ञानतावश श्रीराम और श्रीकृष्ण को स्वार्थी लोगों ने इनको ईश्वर का अवतार बताना आरम्भ कर दिया। तब से जय श्रीराम, जय श्रीकृष्ण, राम-राम आदि अभिवादन के रूप में कहना आरम्भ कर दिया। मुसलमान भाई 'वाले कुम सलाम, सलाम वाले कुम' अभिवादन में कहते हैं। अंग्रेज भाई 'गुड मार्निंग, गुड नाइट' समय के अनुसार अभिवादन करते हैं जो अपने हृदय का प्रेम प्रदर्शन करने का उपयुक्त तरीका नहीं जान पड़ता है। महर्षि ने वेदों के आधार पर वही प्राचीन अभिवादन शब्द 'नमस्ते' को उपयुक्त बताया और आर्य समाजियों को परस्पर मिलने पर 'नमस्ते' का प्रयोग करने का आग्रह किया।

आर्यजगत् में एक वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् पं० अयोध्या प्रसाद वैदिक रिसर्च रिस्कोलर हुए हैं, जिनका अधिक जीवन कलकत्ता में ही बीता था उनको आर्यसमाज की तरफ सन् 1933 में शिकागो में होने वाले विश्व धर्म सम्मेलन में भेजा गया था। वहाँ चर्चा का विषय अभिवादन के लिए उपयुक्त शब्द क्या होना चाहिए, यही था। सभी देशवालों ने अपने-अपने अभिवादन शब्द के सम्बन्ध में बताया। अन्त में पं० अयोध्या प्रसाद जी ने 'नमस्ते' की इतनी सुन्दर व सटीक व्याख्या की, जिसको सभी देश वालों ने 'नमस्ते' को ही अभिवादन के रूप में सबसे अधिक उपयुक्त समझा और इसी को सभी ने स्वीकार कर लिया। तभी से विश्वभर में 'नमस्ते' का ही सबसे अधिक प्रचलन है।

महर्षि का अभिवादन में 'नमस्ते' का पुन: प्रचलन करवाना, मनुष्यमात्र पर एक बहुत बड़ा उपकार है।

## स्वास्थ्य-चर्चा तरबूज

**ग्रीष्म ऋतु में तरबूज खाने और उसका रस पीने से उष्णता पलक झपकते ही नष्ट होती है और मन को बहुत शान्ति मिलती है।** नदी के किनारे रेतीली जमीन में तरबूज की खेती बहुतायत में होती है। छोटी-छोटी क्यारियां बनाकर तरबूज के बीज बोए जाते हैं। इन बीजों से तरबूज की लम्बी-लम्बी बेलें निकलती हैं। तरबूज के फल पकने तक ऊपर से हरे ही रहते हैं, लेकिन उन्हें काटने पर भीतर लाल रंग का मधुर गूदा दिखाई देता है।

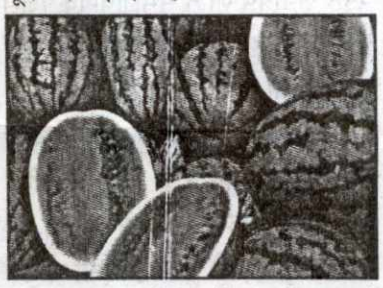

तरबूज की लालिमा से उनकी मधुरता का पता चलता है। तरबूज के टुकड़ों पर काला नमक और काली मिर्च का चूर्ण डालकर खाने से पाचन-क्रिया सरलता से होती है और वात विकृति नहीं होती है। खाली पेट कभी तरबूज नहीं खाना चाहिए।

चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार तरबूज शीत, मूत्र के अवरोध को नष्ट करने वाला होता है। इसके सेवन से ग्रीष्मऋतु की उष्णता नष्ट होती है। तरबूज पित्त के विकारों को नष्ट करता है। इसका रस पीने से उदर की जलन नष्ट होती है।

तरबूज के बीजों की गिरी मस्तिष्क के लिए बहुत लाभदायक होती है। बीज की गिरी को घी में तलकर खाने से मस्तिष्क को बहुत शक्ति मिलती है और स्मरणशक्ति तीव्र होती है।

ग्रीष्म ऋतु में तरबूज खाने व रस पीने से बेचैनी और घबराहट नष्ट होती है। पीलिया रोग में तरबूज के सेवन से बहुत लाभ होता है। मूत्राशय की पथरी में तरबूज का सेवन करने से बहुत लाभ होता है। स्त्रियों के प्रदर (ल्यूकोरिया) रोग में तरबूज बहुत लाभ पहुंचाता है। अस्थमा के रोग से पीड़ित स्त्री-पुरुषों को तरबूज का सेवन नहीं करना चाहिए। खांसी होने पर तरबूज से परहेज करना चाहिए।

### गुणकारी रासायनिक तत्त्व

चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार तरबूज में कैल्शियम, फास्फोरस, लौह, नियोसिन और विटामिन होने के कारण शरीर करे भरपूर शक्ति प्रदान करता है। तरबूज में जल की मात्रा 95.6 प्रतिशत होती है। तरबूज में कैल्शियम 0.1 प्रतिशत, फास्फोरस 0.001 प्रतिशत, और लौह 0.2 मिलीग्राम (प्रति 100 ग्राम) होता है। तरबूज में विटामिन 'सी' नहीं होता, लेकिन विटामिन 'बी' 2.0 माइक्रोग्राम मात्रा में होता है। तरबूज में पाए जाने वाला विटामिन 'ई' शरीर को अधिक शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करता है और सौन्दर्य को विकसित करता है। विटामिन 'ई' एक मिलीग्राम मात्रा में होता है। इनके अतिरिक्त तरबूज में प्रोटीन 0.1 प्रतिशत और कार्बोहाइड्रेट 3.8 प्रतिशत होते हैं। वसा की मात्रा 0.2 प्रतिशत होती है।

### औषधीय उपयोग

- तरबूज का रस चेहरे और गर्दन पर मलने से त्वचा की उष्णता नष्ट होती है और सौंदर्य विकसित होता है।
- तरबूज में विटामिन 'ए' और विटामिन 'सी' पर्याप्त मात्रा में होने के कारण तरबूज का प्रतिदिन सेवन करने और तरबूज के रस को शरीर पर मलने से झुर्रियाँ नष्ट हो जाती हैं।
- तरबूज का रस त्वचा को शुष्क और खुरदुरा होने से सुरक्षित रखता है। इसके गूदे को त्वचा पर मलने से त्वचा के बंद रोम छिद्र खुल जाते हैं और त्वचा में निखार आता है।
- तरबूज खाने व इसका रस पीने से ग्रीष्मऋतु की उष्णता नष्ट होती है। मस्तिष्क का तनाव कम होता है।
- तरबूज खाने से ग्रीष्मऋतु में अधिक प्यास की विकृति से मुक्ति मिलती है। तरबूज का रस निकालकर उसमें मिश्री मिलाकर सेवन करने से मस्तिष्क की उष्णता नष्ट होने से सिरदर्द का निवारण होता है।
- तरबूज का 250 ग्राम रस प्रतिदिन पीने से गुर्दे में पथरी की विकृति से मुक्ति मिलती है।
- प्रतिदिन तरबूज खाने व उसका रस पीने से उच्च रक्तचाप सामान्य हो जाता है।
- संतरे के 100 ग्राम रस में तरबूज का 150 ग्राम रस और अदरक का 3 ग्राम रस मिलाकर प्रतिदिन सेवन करने से उष्णता के प्रकोप से सुरक्षा होती है। शारीरिक शक्ति और स्फूर्ति का विकास होता है।
- ग्रीष्मऋतु में मूत्र का अवरोध होने पर, तरबूज के रस का सेवन करने से अवरोध शीघ्र नष्ट होता है। मूत्र की जलन भी नष्ट होती है।
- तरबूज खाने व रस पीने से पित्त विकार नष्ट होते हैं।
- तरबूज के 200 ग्राम रस में मिश्री मिलाकर प्रात:काल पीने से मूत्र की जलन नष्ट होती है। इससे पित्त के कारण उत्पन्न वमन विकृति भी नष्ट होती है। तरबूज के रस में जीरा (भुना हुआ) और शक्कर मिलाकर पीने से मूत्र विकार नष्ट होते हैं।

( योग चिकित्सा संदेश से साभार )

thearyasamaj.org



# उलझन

## (जन्म-मरण की)

यह एक औद्योगिक और व्यापारिक नगर है, इससे कुछ दूरी पर एक प्रसिद्ध नदी बहती है। इस नदी और नगर के मध्य में राजमार्ग से कुछ हटकर एक सेवाश्रम है जिसमें एक वाचनालय, पुस्तकालय और धर्मार्थ औषधालय है। जहां समीपवर्ती क्षेत्र के रोगी धन्वन्तरि जी की सेवाओं का लाभ उठाते हैं। इस आश्रम के संचालक का नाम सर्वप्रिय जी हैं जो एक भूतपूर्व अभियन्ता (इञ्जीनियर) तथा एक बड़े औद्योगिक केन्द्र के भागीदार थे। सर्वप्रिय जी की कार्यकुशलता से जहां भागीदार प्रसन्न थे, वहां उनकी लोकसम्पर्क की भावना से कर्मचारी भी उन्हें अपना हितैषी मानते थे, वे कर्मचारियों के सुख-दुःख में सदा उनके सहभागी बनते। अपने भागीदारों और कर्मचारियों के किसी भी बन्धु की मृत्यु होने पर उसमें वे अवश्य ही सम्मिलित होते। इस परिवार के विशाल होने के कारण अकस्मात् मौत की कुछ घटनायें घटीं कि जिससे सर्वप्रिय जी के मन में अनेक जिज्ञासायें उभरीं। इनके समाधान के लिए बहुत कुछ पढ़ा और समय-समय पर जब कोई ऐसा अवसर आया तो महात्माओं को आमन्त्रित करके सत्संग रचाए।

सर्वप्रिय जी का प्रथम पौत्र जब विशेषज्ञ बनकर आया तो अपने पुत्र को लोकसंपर्क का कार्य सौंपकर, कुछ सेवाभावियों के सहयोग से सेवाश्रम की स्थापना की। दो वर्ष पश्चात् यहाँ रविवार को सायं के समय सत्संग का कार्यक्रम भी प्रारम्भ हो गया। एक दिन सत्संग से पूर्व कुछ छात्र आए और संचालक जी से निवेदन किया कि हमारा साथी संवेदन एक योग्य विद्यार्थी है। इसके पिता जी की अकस्मात् मृत्यु हो जाने के कारण यह एकदम बदल गया है और बड़े अनोखे-अनोखे प्रश्न पूछता है। हम इसके किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते, हां, इससे उलटा हम सब के मन में अनेक शंकायें उभरती रहती हैं। अत: आपसे प्रार्थना है कि इन भावी सत्संगों में इन प्रश्नों पर प्रकाश डालने की कृपा करेंगे।

सर्वप्रिय जी ने उस दिन उन विद्यार्थियों और सत्संगियों को सम्बोधित करते हुए कहा—जैसे नवजात को पहली सर्दी-गर्मी विशेष अनुभूत होती है। ऐसे ही जब किसी युवक के सामने मौत की कोई पहली घटना घटती है और वह भी किसी विशेष कारण से। यदि वह विशेष रूप से अति निकटवर्ती की हो, तो उसके प्रभाव से अजीब-अजीब प्रश्न उभरना एक स्वाभाविक बात है। जैसे हर मौसम का अपना प्रभाव होता है, ऐसे ही अपने अड़ोस-पड़ोस की विशेष घटनाओं का विशेष प्रभाव होता है। इसके बाद अलग-अलग चीजों का उदाहरण दे-देकर सर्वप्रिय जी ने समझाया कि जिस दुनिया में हम रहते हैं उसमें हजारों चीजें ऐसी हैं जो स्पष्ट बनती हुई दिखाई देती हैं। समय के साथ वे चीजें फिर घिसने लगती हैं और वे जीर्ण होकर या किसी विशेष घटना से एकदम बिखर भी जाती हैं। इसी जन्म-मरण की कहानी को कठोपनिषद् के ऋषि ने **'सस्यमिव मर्त्यः पच्यते, सस्यमिवाजायते पुनः'** जैसे स्वारस्य पूर्ण शब्दों से खेती की प्रक्रिया के आधार पर समझाने का प्रयास किया है। मौत को दूर रखने के लिए शक्ति भर अनेक प्रयास करने पर भी अमर आत्मा इस भौतिक शरीर को छोड़कर एक दिन अज्ञात दिशा की राह लेता है।

जन्म-मरण की यह कहानी हमारे चारों ओर चल रही है। इस कहानी की मार्मिकता को ही किसी के बिछुड़ जाने पर मर गया, चला गया, खेल खत्म हो गया आदि शब्दों से संकेतित किया जाता है। बदली हुई यह स्थिति जब किसी युवक के सामने पहली बार आती है, तो इस अवसर पर अनेक जिज्ञासायें उसके मन में हलचल मचा देती हैं कि मौत किसकी होती है? जब आत्मा अमर है तो उसकी मौत कैसी? फिर मौत के भय से प्रत्येक भयभीत क्यों हैं? और उसके लिए शोक क्यों होता है? तथा उस आत्मा के साथ हमारे रिश्ते-नाते हैं या इस भौतिक शरीर के साथ? ऐसे प्रश्न हर सोचने वाले को इस अवसर पर बहुत कुछ सोचने के लिए विवश कर देते हैं। इन प्रश्नों के साथ एक और प्रश्नमाला भी उभर आती है कि इस अमर आत्मा का अपना स्वरूप क्या है? इसका इस विनश्वर देह से सम्बन्ध कैसे होता है? यह इसमें स्वतन्त्र है या परतन्त्र? इस आत्मा की शरीर में यदि स्वतन्त्र सत्ता है तो इस देह के परिवर्तनों का आत्मा पर प्रभाव होता है या नहीं? शरीर से आत्मा का वियोग किसी निश्चित काल पर होता है या अकाल मृत्यु भी हो सकती है?

क्या सभी प्राणियों के शरीर उनके लिए एक जी का जंजाल है या यह एक क्रमशः आगे बढ़ने का अवसर है। इन सभी जिज्ञासाओं का सर्वप्रिय जी ने अनेक सत्संगों में क्रमशः समाधान बताया। शास्त्रों के प्रमाणों और दृष्टान्तों से स्पष्ट करते हुए इस चर्चा को एक रोचक रूप दिया।

एक दिन आठवीं बैठक में संगीत प्रिय जी के भवन के बाद सर्वप्रिय जी ने कहा—आज तक हमने जो चर्चा की है, उसका यजुर्वेद के **'अश्वत्थे वो निषदनम्'**-12,79 में बहुत ही सुन्दर विश्लेषण मिलता है। इसमें आता है कि हमारा यह संसार अश्वत्थ है, अतः चलायमान है। केवल हमारे द्वारा वर्ते जाने वाली भौतिक चीजें ही नहीं, अपितु हमारा यह प्रिय शरीर भी पीपल के पत्ते की तरह पतनशील है। पता नहीं कब, किधर से हवा का कैसा झोंका आए और यह नीचे पड़ा हुआ मिले। अतः इस सुन्दर मानव चोले को रखने वालो! इसके अनोखेपन को समझो और सोचो क्या इस अनमोल अवसर को प्राप्त करके हम इसका लाभ उठा रहे हैं या दूसरों को केवल यही कहने का मौका दे रहे हैं कि **'अब पछताए क्या होवत है'**।

इस संसार में न जाने आने-जाने का यह क्रम कब से चला आ रहा है, पर इतिहास यह बताता है कि कुछ यहां ऐसे आए कि हजारों, लाखों साल बीत जाने पर भी हम उनको भुला नहीं सके। उन्होंने अपनी विद्या, प्रज्ञा, साधना या कला से ऐसी अमिट छाप छोड़ी कि समय उनको धूलिसात् न कर सका। उनकी यह अमरता हर आने वाले को एक सन्देश देती है कि हम इस दुनिया में चाहे कितने विवश हों, पर फिर भी हम इस चोले में आने के अवसर का लाभ उठाकर अपना और अपनों का जीवन कृतार्थ कर सकते हैं। तभी तो कहा है—**ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोए।** अतः इस अनोखे अवसर को प्राप्त करके हमें **जीवन के दर्शन** को समझते हुए एक **सुसंगत जीवन पथ** को अपनाना चाहिए जिससे हम मंजिल पर पहुंचकर अपने लक्ष्य में सफल होने की खुशी अनुभव कर सकें।

यही सारी चर्चा यहां विस्तार से समझाई है। हां, हो सकता है किसी पाठक को कभी ऐसी स्थिति से निकालना पड़ा हो तो वह अपने विचारों से अवगत करे और जो अपने पूर्वजों की याद में इस रचना को छपाना चाहें तो वे अपने सहयोग के साथ अपनों के नाम भेजें, जिससे वे नाम यहां संवादों में छापे जा सकें।

### जीवन-दर्शन

इसमें बताया गया है कि सभी जीना चाहते हैं और इसीलिए जीवन से प्यार करते हैं। यह चाहना उसी की सफल होती है, जो समर्थ हैं। यह सामर्थ्य अनेक तरह से आता है, अतः जीने के लिए जीवन को समझना जरूरी है? हमारा जीवन जन्म से आरम्भ होता है और जन्म है—जीव-शरीर-मन का जुड़ना। यह सब तो सब का होता ही है, पर जीना तो उसी का है जो **'जीवन के दर्शन'** को समझे।

—**भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य,** B-2, 92/7B. शालीमार नगर. जिला होशियारपुर (पंजाब)

## सूचना

**पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज** के आशीर्वचन से तथा **पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** (रोजड़ वाले) की अध्यक्षता में गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) में दिनांक 13 अगस्त बुधवार से 17 अगस्त 2014 रविवार तक **पाँच दिवसीय आवासीय सरल आध्यात्मिक शिविर** का आयोजन स्त्री आर्यसमाज देव कालोनी रोहतक-**09812792770** व वैदिक सरल आध्यात्मिक शिविर समिति रोहतक-**09466008120** तथा आर्यावर्त टांसपोर्ट कंपनी रोहतक-**09215676662** के द्वारा किया जा रहा है। लाभार्थी संपर्क करें। अन्य सम्पर्क सूत्र—

**09355674547, 09416139382, 09728884949, 09466566064, 09896326718, 09255537679**

**रणवीर सिंह बल्हारा, प्रधान आर्यसमाज सैक्टर-1, रोहतक**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।